www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

वर्ष : १२१ ● अंक : ५० १३ दिसम्बर, २०१६ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी सम्वत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११७

हम अपने यश रूपी सुगन्धित जीवन से अमर रहेंगे।

–डॉ. धीरज सिंह

मेरठ-६ सितम्बर हम अपने यश रूपी सुगन्धित जीवन से सदैव जीवित रहते हैं। यशः शरीर ही हमारा असली जीवन है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हम जो भी कार्य करते हैं वे सब परमपिता परमात्मा के यहाँ हमारे खाते में अंकित हो जाते हैं ये विचार शास्त्री नगर मेरठ में श्री हरवीर सिंह सुमन के छोटे भाई स्व. जयवीर सिंह जी की श्रद्धांजलि सभा में डॉ. धीरज सिंह कार्यवाहक प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने बताया कि जीवन एक संग्राम है प्रतिपल इसमें विजयी होने के लिए ईश भक्ति का सहयोग प्राप्त होता है। गतजन्मों के कर्मो के आधार पर आयु जाति एवं सुविधायें प्राप्त हो ती हैं। अच्छे माता-पिता अच्छा परिवार अच्छा क्षेत्र प्रदेश देश भी उसी का परिणाम होता है। स्व.जयवीर सिंह जी ने पिछले प्रारब्ध से अच्छा जीवन जिया और अच्छे संस्कारों से भावी पीढ़ी का निर्माण किया है ऐसे आदर्श परिवार बहुत कम देखने को मिलते हैं एक समाज सेवी भाई जिसे मिला है महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों से प्रभावित जीवन एवं परिवार उनके सौभाग्य का सूचक है जल्दी जाना जरूर सभी के लिए कष्ट दायक है परमात्मा दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करेंगे। सभा कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द आर्य ने भी शोकाकुल परिवार को धैर्य दिलाते हुए कहा कि-''माली आता देखकर कलियाँ करे पुकार'' फूले-फूले चुन लिये कल हमारी बार''।। क्षणभंगुर जीवन की कली कल प्रातः जाने पिली न खिली इस लिए प्रभुभक्ति करना हमारा लक्ष्य होना चाहिये। जीवन के अन्तिम क्षण तक प्रभु को न भूलें। मृत्यु को न भूलें फिर सदैव सावधानी रहेगी पाप कर्मो से दूर रहेंगे। सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में शान्ति यज्ञ हुआ रणधीर शास्त्री ने वेद पाठ किया स्वामी जी ने बताया कि दो दिनों के बीच एक रात होती है वैसे ही दो रातों के बीच एक दिन होता है उसी प्रकार दो जीवन के बीच एक मृत्यु है दो मृत्युओं के बीच एक जीवन होता है जन्म होते ही मृत्यु पीछे पीछे चल देती है उम्र कितनी अधिक है उससे अच्छा है थोड़ी उम्र को उसने किस प्रकार जिया है किसी की थोड़ी आयु भी लोगों को प्रकाश प्रेरणा करती है कोई सारी आयु स्वयं तथा दूसरों को अन्धेरे में रखते हुए स्वयं अन्धकार में डूब जाते हैं। क्षेत्र एवं मेरठ नगर तथा प्रदेश से आये आत्मीयजनों से परिवार को धैर्य दिलाया और जीवन का रहस्य समझाया तथा अपनी श्रद्धा अर्पित की अन्त में वीरेन्द्र आर्य एवं हरवीर सिंह अमर सिंह चौधरी ने सभी का धन्यवाद किया।

वेदामृतम्

तस्मा अर्षन्ति दिव्या असश्चतः'' स सत्त्वभिः प्रथमो गोषुगच्छति''।
अनिभृष्टतविषिर्हन्त्योजसा'', यं यं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः''।।

क्या तुमने कभी अनुभव किया है कि ब्रह्मणस्पति परमेश्वर की मित्रता क्या रंग लाती है?सांसारिक जनों की ही मित्रता में पड़े रहनेवाले हम सर्वसाधारण लोग उस ब्रह्माण्ड के अधिपति की मैत्री की करामात प्रत्यक्ष नहीं कर पाते। पर जो कोई विरले सन्त–जन उसके साथ सखित्व जोड़ने हैं, वे अपना बताते हैं कि उस जगत्पति का सखा विलक्षण शक्तियों और विलक्षण गुणों से युक्त हो जाता है।

ब्रह्मणस्पति से सखा को प्रथम लाभ यह प्राप्त होता है कि जैसे आकाश से वर्षा की धाराएँ भूमि पर प्रवाहित होती हैं, वैसे ही उसके मानस में निर्बाध रूप से दिव्य विचार–धाराएँ प्रवाहित होने लगती हैं। ब्रह्मणस्पति स्वयं दिव्य विचारों का स्त्रोत हैं, इसलिए स्वभावतः वह अपने सखा के अन्तः करण मे दिव्य विचारों को प्रवाहित करता है। दिव्य–विचार सम्पत्तियों में सबसे बड़ी सम्पत्ति है। इसके विपरीत आसुरी विचार–श्रृंखला महती विपत्ति है। अतः ब्रह्मणस्पति की मैत्री से यदि हमारी विचार–सरणि दिव्य हो जाती है, तो यह एक बड़ी उपलब्धि है। उससे हमारा सम्पूर्ण जीवन ही दिव्य बन सकता है।

ब्रह्मणस्पति के सखा को दूसरा लाभ यह मिलता है कि यह सात्त्विक कर्मो से युक्त होकर भूमियों पर विचरण करता है। दिव्य विचार सात्त्विक कर्मो के जनक हुआ ही करते हैं, एवं प्रभु का सखा दिव्य कर्मो से युक्त हो जाता है। तीसरा लाभ उसे यह प्राप्त होता है कि वह 'ओज' अर्थात आत्मिक बल से अनुप्राणित हो जाता है। उसके इस आत्मिक बल को प्रदग्ध या विनष्ट करने का सामर्थ्य किसी में नहीं होता। इसी आत्मबल या आत्मिक तेज से वह 'असुरों' को मारता है। पर उसका यह मारना भी विलक्षण होता है। वह असुर–प्रवृत्ति के व्यक्ति के शरीर को न मारकर उसकी आसुरी वृत्ति को मारता है और आसुरी वृत्ति को मारकर उसे असुर से देव बना देता है। शस्त्रास्त्रों की मार तो सब कोई कर सकता है, किन्तु आत्मतेज की मार करने का सामर्थ्य परमात्मा के मित्र में ही सम्भव है। आत्मबल के धनी ऋषि–मुनि दृष्टि–निक्षेप मात्र से पापी को पुण्यात्मा भ्रष्ट–चरित्र को पवित्र बना देते हैं, यह प्रभु के मित्र होने का ही उन्हें वरदान होता है। आओ हम भी 'ब्रह्मणस्पति' प्रभु के मित्र बनकर इन लाभों को प्राप्त करें।

संस्थापित–1885
श्रीमद्दयानन्दाब्द–192

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

फोन नं0–0522–2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ
का

वार्षिक बृहद् अधिवेशन

दिनांक–28, 29 जनवरी,2017 तद्नुसार दिन शनिवार एवं रविवार
(तिथि–माघ शुक्ल प्रतिपदा एवं द्वितीया) सम्वत्–2073)

अधिवेशन स्थल– सभा भवन प्रांगण– 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

आर्य बन्धुओं/बहिनों,

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का द्वि–दिवसीय वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक 28, 29 जनवरी,2017 तद्नुसार दिन शनिवार एवं रविवार को सभा प्रांगण में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों/जिला उप सभाओं/शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेज दिये गये हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त श्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में कार्यवाहक प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः–

(क) आर्य समाज के सभासद/सदस्यों का रू0 5/– प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिंसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।

(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः– दुकानों/भवनों/अतिथि गृहों/विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, किसी विक्रय से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश ।

(ग) सूदकोटि के रूप में रू0 25/–

(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य/सभासद रू0 2/– वार्षिक

(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू0 25/– इसमें किसी भी समाज के पहले 11 सदस्य पर 1, 31 सदस्य पर 2 एवं प्रत्येक अगले 20 सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।

(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू0 100/– अथवा आजीवन शुल्क के रूप में 1000/– के हिंसाब से।

(ज) जिला आर्य प्रतिनिधि सभाएं रू0 100/– दशांश एक मुश्त तथा रू0 100/– आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू0 25/– भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।

(झ) प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम 11 समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में दिनांक–10 जनवरी, 2017 तक अवश्य जमा करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। बैंक ड्राफ्ट आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें।

सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक/प्रतिनिधियों के ठहरने की व्यवस्था है साथ ही भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया रास्ते के लिए ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ रखें।

(डॉ0 धीरज सिंह)	(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)	(अरविन्द कुमार)
कार्यवाहक प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

देवेन्द्रपाल वर्मा — प्रधान/संरक्षक
डॉ. धीरज सिंह — कार्यवाहक प्रधान
स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती — मंत्री/प्रधान सम्पादक
आचार्य वेदव्रत अवस्थी — सम्पादक

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

श्रद्धा और आर्य समाज

प्रायः लोग कहते हैं कि आर्य समाजी लोगों में अश्रद्धा व मतभेदों का प्रभाव बढ़ गया है। इस कथन की सत्यता सही या गलत की जांच एक अलग विषय है लेकिन जब सभ्य समाज के लोग यह कहने लगे तो आत्म निरीक्षण की आवश्यकता होती है।

महर्षि द्वारा आर्य समाज की स्थापना के समय सर्वत्र अन्ध विश्वास व आडम्बर व्याप्त था उस समय तर्क और युक्तियों के द्वारा इसे हटाया गया। बाद में यही शायद सीमा विहीन होकर अश्रद्धा के रूप में स्थापित हो गया।

श्रद्धा का सरलार्थ तो सत्य को धारण करने से है अर्थात् सत्य को जब मनुष्य हृदय से स्वीकार कर ले तभी श्रद्धा उत्पन्न होती है या यूँ कहें कि श्रद्धा मनुष्य के हृदय में सत्य की दृढ़ता पैदा करती है। महर्षि के मन में बचपन में सच्चे शिव की सत्यता को जानने के लिए उपजी श्रद्धा रूपी शक्ति ने जिज्ञासु बना दिया। जो आर्यो के लिए श्रद्धेय हो गये। परमपिता परमात्मा पर अटूट श्रद्धा के कारण ही महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती में आत्मबल व दृढ़ता की कमी नहीं थी। उदयपुर जाने से पूर्व ऋषि ने यही कहा था कि ''चाहे मेरी उंगलियों को मोमबत्ती की तरह क्यों न जला दिया जाये, मैं सत्य सिद्धान्तों के प्रचार से पीछे न हटूँगा।'' सत्य सिद्धान्तों के कारण ही 'मुंशीराम' स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में परिवर्तित हुए। सत्य पर अडिगता ही श्रद्धा को जन्म देती है।

कुछ समय से आर्य समाज का उत्साह व लगन फीका पड़ता जा रहा है। निःस्वार्थ भाव से ऋषि मिशन के प्रति समर्पित कार्यकत्ताओं की कमी महसूस होती है जो है भी वह तटस्थ रहना पसन्द करते हैं। आपसी मतभेदों को दूर किया जा सकता है यदि एक मिशन वैदिक हो। मन में उत्पन्न भेदों के लिए भी समाधान ढूढ़ा जा सकता है। ऋषि मिशन के प्रति आशंका या अंश्रद्धा उचित नहीं। योगीराज कृष्ण ने भी कहा है ''संशयात्मा विनश्यति'' संशय युक्त मनुष्य का विनाश हो जाता है। परमपिता परमात्मा पर विश्वास ही सत्य पर विश्वास है। इससे आत्मबल व सफलता तो मिलती है धन ऐश्वर्य भी प्राप्त होता है। ऋ. १०/१५१/०४ में ''श्रद्धा विन्दते वसु'' सत्य ही कहा है। हर कार्य मनुष्य को श्रद्धा पूर्वक करना चाहिए। हर पल हर क्षण हम श्रद्धायुकत रहें। श्रद्धा से ही सफलता प्राप्त होती है तभी इसके अगले मंत्र में निद्रेश है कि-

श्रद्धाम् प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनम् परि।
श्रद्धाम् सूर्यस्य निमुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः।।
ऋ.१०/१५१/०५

अर्थात् हम प्रातः मध्यान्ह और सायंकाल में श्रद्धा का आवाहन करते हैं। हे श्रद्धे तू हमें इस लोक में श्रद्धा युक्त कर दे। महर्षि अपने जीवन में सदैव निष्कलंक ही रहे अपनी छवि के प्रति हमेशा सतर्क व सावधान रहे। हम ऋषि भक्त इससे अलग कैसे हो सकते हैं।

-कार्यकारी सम्पादक

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

(जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ द्वारा आयोजित)

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष आगामी २३ दिसम्बर, २०१६ को स्थानीय श्री मद्दयानन्द बाल सदन मोती नगर के सभाकक्ष में अपरान्ह २ बजे से सायं ६ बजे तक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जायेगा। इस अवसर पर नगर की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधि तथा आर्य विद्वानों द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर आधारित व्याख्यान होंगे। सभा मंत्री श्री प्रबोध सागर जौहरी ने सभी आर्य बन्धुओं से अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर कार्यक्रम को सफल बनाने का निवेदन किया है।

-विमल किशोर आर्य
उपमंत्री
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा,
लखनऊ

आर्य समाज लल्लापुरा का ८०वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी का ८०वाँ वार्षिकोत्सव दि. १५ दिसम्बर से १८ दिसम्बर २०१६ तक स्थान-पटेल धर्मशाला तेलियाबाग में बड़ी धूम धाम से मनाया जायेगा।

उत्सव में समागत विद्वान व भजनोपदेशक डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, आचार्य महावीर मुमुख, पं. रविन्द्र कमार शास्त्री पं. राम आधार शास्त्री, स्वामी राजेश योगी श्री शिव नारायण गौतम, सोमेन्द्र आर्य हैं।

कार्यक्रम में प्रातः ८ बजे से दोपहर १२ बजे तक यज्ञ, प्रवचन, भजन व सम्मेलन तथा सायं ५ बजे से रात्रि ६ बजे तक संध्या भजन व प्रवचन आदि होंगे। इस वैदिक महोत्सव में सभी लोग सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

अथ द्वितीय समुल्लासारम्भः

इत्यादि मिथ्या बातों का उपेदश बाल्यावस्था ही में सन्तानों के हदय में डाल दें कि जिस से स्वसन्तान किसी के भ्रमजाल में पड़ के दुःख न पावें और वीर्य की रक्षा मे आनन्द और नाश करने में दुःखप्राप्ति भी जना देनी चाहिये। जैसे–'देखों जिस के शरीर मे सुरक्षित वीर्य रहता है तब उस को आरोग्य बुद्धि बल पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। इसके रक्षण मे यही रीति है कि विषयों की कथा, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, सम्भाषण और स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक रह कर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त होवें। जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता वह नपुंसक महाकुलक्षणी और जिस को प्रमेह रोग होता है वह दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि उत्साह साहस, धैर्य, बल पराक्रमादि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है। जो तुम लोग सुशिक्षा और विद्या के ग्रहण, वीर्य की रक्षा करने मे इस समय चूकोगे तो पुनः इस जन्म में तुम को यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं हो सकेगा। जब तक हम लोग गृहकर्मो के करने वाले जीते हैं तभी तक तुम को विद्या–ग्रहण और शरीर का बल बढ़ाना चाहिये।' इसी प्रकार की अन्य अन्य शिक्षा भी माता और पिता करें

इसीलिए 'मातृमान् पितृमान् शब्द का ग्रहण उक्त वचन में किया हैं अर्थात जन्म से 5 वें वर्ष तक बालकों को माता 6 वर्ष से 8 वें वर्ष तक पिता शिक्षा करें और 9 वें वर्ष के आरम्भ मे द्विज अपने सन्तानों का उपनयन करके आचार्य कुल में अर्थात जहां पूर्ण विद्वान और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करने वाली हों वहां लड़के और लड़कियों को भेज दें और शूद्रादि वर्ण उपानयन किये विना विद्याभ्यास के लिये गुरूकुल मे भेज दें।

उन्हीं के सन्तान विद्वान, सभ्य और सुशिक्षित होते हैं जो पढ़ाने में सन्तानों का लाड़न कभी नहीं करते किन्तु ताड़ना ही करते रहते हैं। इसमें व्याकरण महाभाष्य का प्रमाण है–

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः। लालनाश्रयिणों दोषास्ताडनाश्रयिणों गुणाः।।

अर्थ जो माता पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे जानो अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों वा शिष्यों का लाड़न करते हैं वे अपने सन्तानों और शिष्यों का विष पिला के नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। क्योंकि लाड़न से सन्तान और शिष्य दोषयुक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं ओर सन्तान और शिष्य लोग भी ताड़ना से प्रसन्न और लाड़न से अप्रसन्न सदा रहा करें। परन्तु माता, पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें किन्तु ऊपर से भयप्रदान और भीतर से कृपादृष्टि रक्खें।

जैसे अन्य शिक्षा की वैसी चोरी, जारी आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य मिथ्याभाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष मोह आदि दोषों को छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा करें। क्योंकि जिस पुरूष ने जिसके सामने एक वार चोरी जारी, मिथ्याभाषणादि कर्म किया उस की प्रतिष्ठा उस के सामने मृत्युपर्य्यन्त नही होती। जैसी हानि प्रतिज्ञा मिथ्या करने वाले की होती है वैसी अन्य किसी की नहीं। इस से जिस के साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी उस के साथ वैसे ही पूरी करनी चाहिये अर्थात् जैसे किसी ने किसी से कहा कि मैं तुम को वा तुम मुझ से अमुक समय में मिलूँगा वा मिलना अथवा अमुक वस्तु अमुक समय में तुम को मै। दूँगा। इस को वैसे ही पूरी करे नहीं तो उसकी प्रतीति कोई भी न करेगा, सइलिये सदा सत्यभाषण और सत्यप्रतिज्ञायुक्त सब को होना चाहिये। किसी को अभिमान करना योग्य नहीं क्योंकि 'अभिमानःश्रियं हन्ति' यह विदुरनीति का वचन है। जो अभिमान अर्थात अहंकार है वह सब शोभा और लक्ष्मी का नाश कर देता है, इस वास्ते अभिमान करना न चाहिये। छल कपट वा कृतघ्नता से अपना ही हदय दुःखित होता है तो दूसरे की क्या कथा कहनी चाहिये। छल और कपट उसको कहते हैं जो भीतर और बाहर और दूसरे को मोह में डाल और दूसरे की हानि पर ध्यान न देकर स्वप्रयोजन सिद्ध करना। 'कृतघ्नता' उस को कहते हैं कि किसी के किए हुए उपकार को न मानना। क्रोधादि दोष और कटुवचन को छोड़ शान्त और मुधुर वचन ही बोले और बहुत बकवाद न करे। जितना बोलना चाहिये उससे न्यून वा अधिक न बोले। बड़ों को मान्य दे उन के सामने उठ कर जा के उच्चासन पर बैठावे, प्रथम 'नमस्ते' करे। उनके सामने उत्तमासन पर न बैठे। सभा में वैसे स्थान में बैठे जैसी अपनी योग्यता हो और दूसरा कोई न उठावे।विरोध किसी से न करें। सम्पन्न होकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग रक्खें। सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग, अपने माता,पिता और आचार्य की तन,मन और धनादि उत्तम–उत्तम पदार्थो से प्रीतिपूर्वक सेवा करें।

यान्यस्माक सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।। यह तैत्ति0।

इसका यह अभिप्राय है कि माता पिता आचार्य्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा उपदेश करें और यह भी कहें कि जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उन–उन का ग्रहण करो और जो–जो दुष्ट कर्म हों उनका तयाग कर दिया करो। जो–जो सत्य जाने उन–उनका प्रकाश और प्रचार करे। किसी पाखण्डी दुष्टाचारी मनुष्य पर विश्वास न करें और जिस–जिस उत्तम कर्म के लिये माता, पिता और आचार्य आज्ञा देवें उस–उस का यथेष्ट पालन करो।जैसे माता पिता ने धर्म विद्या, अच्छे आचरण के श्लोक 'निरूक्त 'अष्टाध्यायी अथवा अन्य सूत्र वा वेदमन्त्र कण्ठस्थ कराये हों उन–उन का पुनः अर्थ विद्यार्थियों को विदित करावें। जैसे प्रथम समुल्लास में परमेश्वर का व्याख्यान किया है उसी प्रकार मान के उस की उपासना करें। जिस प्रकार आरोग्य विद्या और बल प्राप्त हो उसी प्रकार भोजन छादन और व्यवहार करें करावें अर्थात् जितनी क्षुधा हो उस से कुछ न्यून भोजन करे। मद्य मांसादि के सेवन से अलग रहें। अज्ञात गम्भीर जल में प्रवेश न करें क्योंकि जलजन्तु व किसी अन्य पदार्थ से दुःख और जो तरना न जाने तो डूब ही जा सकता है। 'नाविज्ञाते जलाशये' यह मनु का वचन। अविज्ञात जलाशय में प्रविष्ट होके स्नानादि न करें।

दुष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्। सत्यपूतां वदेद्वाचं मनःपूतं समाचरेत्।। मनु0।।

अर्थ–नीचे दृष्टि कर ऊँचे नीचे स्थान को देख के चले, वस्त्र से छान कर जल पिये, सत्य से पवित्र करके वचन बोले , मन से विचार के आचरण करे।

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः। न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये वको यथा।।

यह किसी कवि का वचन है। वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण वैरी है जिन्होंने उन को विद्या की प्राप्ति न कराई, वे विद्वानों की सभा में वैसे तिरस्कृत और कुशोभित होते हैं जैसे हंसों के बीज में बगुला। यही माता, पिता का कर्त्तव्य कर्म परमधर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन, मन धन से विद्या, धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना।

यह बालशिक्षा में थोड़ा से लिखा, इतने ही से बुद्धिमान् लोग बहुत समझ लेंगे।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे
सुभाषाविभूषिते बालशिक्षाविषये
द्वितीयः समुल्लासः सम्पूर्णः।।2।।

क्रमशः अगले अंक में.....

www.thearyasamaj.org

धरोहर.....

परमात्मा की कृपा के पात्र-

श्री मा0 सुरेन्द्र जी आर्य

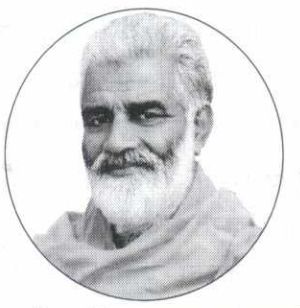

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

महाराजा मूर्तृहरि ने मनुष्य को चार भागों में विभक्त करते हुए तुलनातमक दृष्टि से वर्गीकरण किया है जैसे डा0 थर्मामीटर से बुखार की जाँच करता है दूधिया लीटर से दूध नापता है तथा कपडे का व्यापारी मीटर (गज) से कपडा नाप तोल करता है उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति इसके आधार पर अपनी पहिचान करके उन्नति हेतु प्रयास करता हुआ देवतुल्य प्रशंसा और यश प्राप्त कर सकता है। उन्होंने लिखा है कि जो सज्जन अपनी भी हानि करके दूसरों को लाभ पहुँचाते है वे प्रथम श्रेणी के व्यक्ति देवतुल्य होते है जो अपनी भी हानि न हो और दूसरों का उपकार करते है वे द्वितीय श्रेणी अर्थात मनुष्य कोटि में सम्मान प्राप्त करते है तथा जो व्यक्ति अपने लाभ के लिए दूसरो को हानि पहुँचाते है वे तृतीय श्रेणी मे आते है जो असुर कहलाते है जो अपनी भी हानि करके अन्यों को भी हानि पहुँचाते है वे चतुर्थ श्रेणी के व्यक्ति होते है उनका क्या नाम कहूँ में भी नहीं जानता अर्थात वे नर पिशाच आदि नीचे की श्रेणी में आने योग्य होते हैं।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि श्री मा. सुरेन्द्र जी आर्य उच्चकोटि के व्यक्तित्व हैं। आपने अपने जीवन में सदैव स्वयं हानि में रहकर भी परोपकार किया है कभी भी किसी प्राणी को दुःखी नही किया सदैव प्रसन्नता पूर्वक मानव सेवा में संलग्न रहे हैं। उसी का सुपरिणाम है कि आपका सुपुत्र यशस्वी तेजस्वी–प्रतापी –परोपकारी आज्ञाकारी विद्वान बनकर विदेशें में अपने माता–पिता का नाम यशस्वी कर रहे है। महीर्ष दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे लिखा है कि ''सौभाग्यशाली है वह सन्तान जिसके माता–पिता धार्मिक और विद्वान हो'' जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। इस अधार पर कहा जा सकता है कि आपके पुत्र आपके कारण सौभाग्यशाली है और आप पुत्रों की योग्यता के कारण सौभाग्यशाली है। वर्तमान समय मे हजारों में कोई एक–2 ही ऐसे माता पिता और माता पिता की सन्ताने देखने और सुनने को मिलती है जैसे आप है?वास्तव में आपकी प्रसन्नता इस बात की द्योतक है आज वृद्धावस्था में प्रायः माता–पिता अपनी सन्तानों को बुरा–भला कहते रहते है कोसते रहते है जो अपनी सन्तान की प्रशंसा कर रहा हो मानों यह चाणक्य की परिभाषा में ''सुतास्तु सुधियः''होने से धन्य है उसका जीवन और गृहस्थाश्रम धन्य हो गया। मा0 सुरेन्द्र जी वास्तव मे ही धन्य है आपके परिवार में शुद्ध और सात्विक वातावरण है उसके प्रति आपका त्याग और तपस्वी दिनचर्या ही प्रमाण है आपका रहन सहन आपका आहार और व्यवहार सदैव महापुरूषों जैसा ही रहा है। आप महाराजा जनक की तरह विदेह बनकर आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ाते रहें हैं आपके ऋषिपरम्परा और पूर्वजों की परम्परा का पालन करके उनके ऋण से उऋण होने का पुरूषार्थ किया है। एक संस्कारित और सम्य सन्तान के निर्माण मे 20 वर्ष का समय लगता है इतने समय तक पिता को तपस्वी जीवन जीना होता है आपने उसी तपस्या की भट्टी में अपने जीवन को कुन्दन बनाया है। आपकी जयन्ती इस बात का साक्षात् प्रमाण है। आपने विपत्ति के समय धैर्य से कार्य किया तथा सम्पन्नता आने पर भी सरलता सौम्यता है अहंकार नाम मात्र का भी नहीं है। आपने विद्यारूपी धन का दान करके पुण्य और यश कमाया है यश के प्रति आपकी कोई रूचि नहीं रही तथा स्वाध्याय और सत्संग के माध्यम से जो ज्ञानार्जन किया वेदादि सत्यशास्त्रों के पढ़ने में आपकी रूचि को देखकर सभी आत्मीय आपको नमन करते रहें है। आपके पास वह ज्ञान सम्पदा है जिसे कोई न चुरा सकता है तथा कोई उसका बंटवारा भी नही कर सकता। कोई भी अधिकारी उस पर टैक्स भी नहीं लगा सकता इस धन को जितने लोगों में बाँटा जायेगा उतना ही बढ़ता चला जाता है यह एक आपका चमत्कार है तभी तो आप सदैव प्रसन्न रहते हुए सभी को सदा प्रसन्न रखते है आपके मुखमण्डल की आभा नवोदित सूर्य की तरह सभी को प्रभावित करती है आपकी वाणी में मधुरता सरसता एवं साक्षत् सरस्वती का वास है। आपके परिवारीय सभी सदस्य आपके संस्कारों से सुसंस्कारित है आपके शिव संकल्पों का ही सुपरिणाम है जो आप की सुयोग्य सन्तान आपके अनुव्रती होकर वेदानुकूल ''अनुव्रतः पितुः–पुत्रो'' अपना सौभाग्य बढ़ा रहे है।'' तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु परमात्मा से प्रार्थना है कि यजुर्वेद के इस शिव संकल्प सूक्त के आधार पर साधना करते हुए आप पके हुए खरबूजे की तरह सुगन्धित जीवन जीते हुए ''ऊर्वारूकमिव'' समय आने पर मोक्ष मार्ग के पथिक बनें। शेष जीवन विद्या प्रसार तथा योग्य साधना में व्यतीत करे। आपकी जयन्ती शुभ एवं शिव –संकल्प युक्त हो आपके सुपुत्र देश–देशान्तर द्वीप द्वीपान्तरों में आपके यश का संवर्द्धन करते रहें आप स्वस्थ रहते हुए जीवेमशरदःशतम्–भूयश्च शरदःशतात्'' को सार्थक करेगे ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 लखनऊ की ओर से आपके सुखमय जीवन के लिए एवं स्मारिका के सफल सुन्दर प्रकाशन के लिए बहुत–बहुत शुभ कामनायें स्वीकरोतु भवान्।।

–संचालक गुरूकुलपूठ
गढ़मुक्तेश्वर हापुड़
मो. 9837402192

ईश्वर ने वेद – ज्ञान क्यों दिया, इसके कारण -खुशहाल चन्द्र आर्य

ईश्वर ने वेद - ज्ञान क्यों दिया, इसके मुख्य चार कारण हैं। वे इसी भांति है।

१- ज्ञान दो किस्म का होता है :- ज्ञान दो किस्म का होता है। पहला स्वाभाविक ज्ञान दूसरा नैमित्तिक ज्ञान। स्वाभाविक ज्ञान खाना-पीना, सोना-जागना, हंसना-रोना तथा बच्चे पैदा करना है। यह ज्ञान पशु-पक्षियों में अधिक और मनुष्यों में कम होता है। कारण पशु-पक्षी इसी ज्ञान से अपना पूरा जीवन काम चलाते हैं। इसमें किये हुए कर्मो का फल नहीं मिलता। दूसरा नैमित्तिक ज्ञान वह होता है जो सिखाने से सीखा जाता हैं। सिखाये बगैर इस ज्ञान का कोई महत्व नहीं। यह ज्ञान मनुष्यों में बहुत अधिक और पशु-पक्षियों में बहुत कम होता है। पशु-पक्षियों का बच्चा पैदा होते ही पानी में तैरता है, जैसे कुत्ते के बच्चे को आप पानी में डाल दीजिए,वह तैर कर बाहर निकल जायेगा कारण यह पशु-पक्षियों के लिए स्वाभाविक ज्ञान है और मनुष्य के बच्चे को यदि आप पानी में डाल देंगे तो वह डूब जायेगा और यदि आप उसको तैरना सिखा दोगे तो वह तैर कर पार कर देगा कारण तैरना मनुष्य के लिए नैमित्तिक ज्ञान है। इस ज्ञान से किये हुए कर्मो का ईश्वर की न्याय व्यवस्था से उसे अच्छा या बुरा फल मिलता है। मनुष्य भी खाता-पीता, उठता-बैठता, सोता-जागता, आँख खोलता- बन्द करना, बच्चे पैदा करना, ये सभी काम उसके स्वाभाविक काम हैं, इनका फल ईश्वर नहीं देता। अब प्रश्न उठता कि जब ईश्वर ने प्रकृति से जीवों के लिए आदि में सृष्टि तिब्बत के पठार पर कृत्रिम गर्भाशय बनाकर अनेक नौजवान लड़के-लड़कियों को उत्पन्न किया उस समय उनके माता-पिता, गुरु आदि कोई नहीं थे, जिनसे वे युवा लड़के-लड़कियाँ चलना, फिरना, बोलना आदि सीख सके। उस समय उनका ईश्वर ही माता-पिता तथा गुरु था, इसलिए ईश्वर ने उनको चलना-फिरना, बोलना तथा अपने जीवन को कैसे उन्नत व समृद्धिशाली बनाकर जीवन को सुखी व श्रेष्ठ बनाते हुए कैसे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकें जो मनुष्य योनि में आने का जीव का मुख्य उद्देश्य है। इसलिए ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों द्वारा जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा थे, उनके हृदय में चार वेद, जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, प्रकाशित करके उनके मुख से उच्चारित करवाया। ज्ञान ईश्वर प्रदत्त था और उच्चारित उन ऋषियों ने किया। जिस प्रकार कोई व्यक्ति माईक पर बोलता है। तो बोलता व्यक्ति है और आवाज को प्रेषित माईक करता है। ठीक उसी प्रकार जो वेद ज्ञान चार ऋषियों द्वारा उच्चारित किया गया, वह ज्ञान ईश्वर का था और उच्चारित करने वाले ऋषि थे। ऋषियों के मुख से सबसे पहले ब्रह्म ऋषि ने सुना। ब्रह्म की बुद्धि इतनी प्रखर थी कि उन्होंने चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और फिर उसने बाकी जनता को सुनाया। और फिर बावी जनता ने ब्रह्म से सुनकर माता-पिता अपने बेटे-पौत्रों को तथा गुरु अपने शिष्यों को सुनाया। इस प्रकार से बाप-बेटे को और गुरु-शिष्य को सुनाने की परम्परा चालु हो गई जो अब तक चलती आ रही है। महाभारत तक तो वेद-ज्ञान का प्रचार व प्रसार बराबर चलता रहा, परन्तु महाभारत के भीषण युद्ध में अधिकतर यौद्धा, विद्वान, आचार्य आदि या तो मारे गये या मर गये और महाभारत के बाद मूर्ख, अविद्वान् व स्वार्थी लोगों ने अपने-अपने ढंग से अनेक मत-मतान्तर चला दिये जिससे वेद-ज्ञान प्रायः लुप्त हो गया। वेद ज्ञान में ईश्वर ने मनुष्य को अपने जीवन में क्या काम करना चाहिए और क्या काम नहीं करना चाहिए सब दिया। वेदों के अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन को उन्नत, समृद्धिशाली व सुखी तो बनाता ही है, साथ ही धर्म, अर्थ, काम को कर्त्तव्य भाव से करते हुए ध्यान, धारणा व समाधि तक पहुंच जाता है और समाधि में आनन्द को अपने जीवन में ही प्राप्त करता हैं और मृत्यु के बाद मोक्ष की स्थिति में

क्रमशः.....८

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज ही एक विकल्प समस्त भ्रम नाश का

-श्याम किशोर आर्य सिद्धान्त शास्त्री प्रधान आर्य समाज चौक प्रयाग

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में ब्रह्मसमाज की समीक्षा करते हुये लिखा है जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार करना स्वीकार करो, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अतिउचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्य समाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता है।

यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी चाल है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नही। (स.5.11 पृ. 391, सार्वदेशिक)

दयानन्द असाधारण दिव्य मेघा सम्पन्न वेद के अप्रतिम ज्ञानी थे, उन्होंने संसार के ज्ञानी तपस्वियों को मथा और नवनीत स्वरूप लगभग 3000 ग्रन्थों को प्रमाण योग्य घोपित किया उन तथ्यों का उद्घाटन किया। जिसकी कल्पना अभी वैज्ञानिक या अनुभवी नही कर पाये है। अब प्रकाश में आते जा रहे हैं उनकी महत्ता की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। चाहे हम कितना भ्रामक प्रचार करें, स्वीकार उसी के फलभूति को हो रही है।

वर्तमान में चरित्र दोष कार्मिक, मानसिक या वाचिक से वचना असम्भव माना जा रहा है। परन्तु दयानन्द का अनुयायी रेलवे की टिकट खिड़की पर लेन देन में, या मुकदमें मे साक्षी रूप में न्यायाधीश को उनकी सत्यता पर इतना विश्वास था कि यह असत्य भाषण नहीं करेगा। वह निर्णय दे देता था। वह गाता फिरता था -

''चाहे कोई आये मुकाबिले में
सबको चैलेन्ज हमारा है
नहि आर्यसमाज का बच्चा भी,
कभी शास्त्रार्थो में हारा है।

परिणाम स्वरूप इस्लाम की मान्यताये, ईस्राइल का बाइबिल अनुवाद, पुराणों के कथावाचकों की प्रचार शैली बदल गई ये सब मूल विषय को स्पर्श न करके लौकिक आलंकारिक जाल में जनता को ठग रहे है।

इस सब में वर्तमान शासक सहायक है। उसका कारण आडम्बर नये चोले में अवतरित होकर जन साधारण को दिग्भ्रमित कर सदाचार का लोप कर रहा है।

इसे ही दृष्टिगत करते हुये कहा गया है-

''हँसी आती है मुझे इन हजरते इन्सान पर
फेले बद तो खुद करे लानत करे शैतान पर''

''कालहि कर्महि ईश्वरहि मिथ्या दोष लगाई''

महर्षि दयानन्द ने समाधान दिया है जीवकर्मों का कर्त्ता है और ईश्वर कर्म फल प्रदाता है। जैसा जीवकर्म करता है। वैसा फल ईश्वर देता है। जीव से ईश्वर कर्म नहीं कराता है।

यह भ्रम है कि सब कुछ ईश्वर करता है और कराता है जीव तो तेली के बैल की भांति आँख पर पट्टी बांधे घूमता रहता है। कर्म करने के उपरान्त-अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभभ् चाहे करोड़ों जपी हो। क्षमा नहीं होंगे। चाहे गंगास्नान करो तीर्थ करो, जाप कराओ, हज को जाओं या ईसा, मुहम्मद पर ईमान लाओं। राम और कृष्ण या बुद्ध नहीं बचायेगे।

भाग्य हमारे कर्मों का पिटारा है। जो पिटारे में है वही निकलेगा।

नई लहर में इस्लाम के प्रचारक या ईसाई लोग कहते है कि सुख शान्ति का जीवन यापन करो विश्व में शान्ति हमारी कुरान या बाइबिल की यही शिक्षा है इसे यदि शासन स्वीकार कराने को अनुमति दे तो भारत स्वर्ग बन जाये। हर मनुष्य बहिश्त और जन्नत का अधिकारी बन जाय। उनके अनुसार बायबिल वाले के लिये कुरान या अन्य मत वाले। कुरान (इस्लाम) वाले के लिये अन्य विरोधी उनके पैगम्बर नबी रसूल को ही मानने वाला अन्य काफिर मुरर्तिद है वह जन्नत बहिश्त नही पायेगा।

दोनों के विरोधी शैतान नामक शय-गलत, उल्टा कार्य (पाप) कराती है। वे स्वयं भ्रम में है और भ्रम फैला रहे है। शैतान की हस्ती मानकर। यदि शैतान की हस्ती मानते हैं तो ईश्वर में ईश्वरत्व की सामर्थ्य छिन जाती है। उसकी सर्वज्ञता-अज्ञान बन जाती है। क्यों शैतान को उत्पन्न किया ?शैतान वरगला रहा है। इन्सान को ईश्वर उससे बचा नही पा रहा। (हावी) है। यहाँ तक कि शैतान रसूल/नबी पर गालिब हो गया - सूरत नज़म और सूरत हज में आयत बना दी। ''अफरा आयतुम..... लतुरजा''

इसका मंशा कई तरह आया। अहले तहकीक ने यह फरमाया कि लगे पढ़ने एक रोज रसूल। सूरते नजम को जो वादे नजूल जब ये आयत जबान पर लाये इक तवक्कफ के साथ पेश आये दिल में डाला जो देव ने विश्वास, वाले अजराह सहज खे रूलनास अफरायतुम..... लतुरतजी

''अल्लाह में अज्ञान समाया, अपना दुश्मन मुफ्त बनाया''

सुन के मुशरिक हुये निहायत शाद, समझे हजरत ने बहसिफ़त की याद।

अलग़रज जब आखिर सूरत पर। करने सिजदा लगे जो वे सरवर आये सिजदे में जुमला अहले यकीन। और साथ उनके मुशरिकाने लईन पसू किया अज़हाल सरता सर। जिबरईल अमीन ने आकर सुन के हजरत हुये वसा महजू तब तसल्ली को पहुँची आयत यूं मा अरसलनामिन कबलिक इत्यादि और न भेजा था हमने ऐ मकबूल तेरे आने से पहिले कोई रसूल और न कोई नबी किया इरसाल पर लगा जब कि बाँधने वह ख्याल डालने यक बयक लगा इब्लीस, इसके बाँधी ख्याल में तलवीस फिर हटा लेने खलिक उस शै को, वह जो शैतान ने दिल में डाली हो फिर करे हुक्म उस्तवार खुदा, अपनी आयत और निशानी का और खुदा बन्द इल्म वाला है, हिकमत उसकी बयां से वाला है

(वफ्सीर जादतुल आखिरत से उद्धृत)

आर्य पथिक ग्रन्थावली पृष्ट 56,57

एजाज मुहम्मदी के लेखक ने पृष्ट 191 में लिखा है

''इल्म दो फ़िक़ा तफसीरी हदीस। हर कि खानद गैर गरदद खबीस''

जब मुसलमान आवागमन को नहीं मानते, तब खुदा का किसी को सम्मति देना और किसी को क्रोध करना और किसी को कुमार्ग में डालना के क्या अर्थ है ?

करते न गुनह, मरते न, होती न कियामत।

बतलाइये क्या होता जो शैतां न होता ।।

रवाना जंगी गर न मंजूरे खुदा होती तो क्यों।

हज़रते काबील आते खानये आदम के बीच।

ये संदेश शिक्षा देने वाले ईश्वर (खुदा) को मानकर इन्सानियत मानवता का क्या भला किया जा सकता है?

महर्षि दयानन्द का वेद के माध्यम से संदेश। समाधान है। सीधा मार्ग वही होता है जिसमें सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना पक्षपात रहित न्याय धर्म का आचरण करना आदि है और इसके विपरीत का त्याग करना। (स.5 14 समीक्षा 132 पृष्ट 595)

कृष्ण - ये यथामां प्रपद्यन्ते तांस्तैव भजाम्यहम्। गीता

ईश्वर न्याय कर्ता दयालु है जीव अल्पज्ञ शुभ अशुभ कर्मों का कर्ता और फल का भोगने वाला है। भ्रष्टाचार, दुराचार, अनाचार मनुष्य करता है ईश्वर न्याय करेगा। कोई उसके न्याय से बच नही सकता है। न बचा सकता है। सब प्राणी उसके है प्रत्येक के साथ दया और न्याय समान रूप से करता है। न कम न ज्यादा।

इसमें सहयोगी आर्य एवं आर्य समाज है।उसके साथ मिलकर देश और उसके प्रत्येक प्राणी के उन्नति में सहायक बने। वेद इसी की शिक्षा देता है।

सहृदयम् सामंनस्यमविद्वेषं कृणोमि व

अन्योऽन्यम्मिहर्यत वत्सं जातामिइवाघ्न्याः।।

ऋषि दयानन्द का समाधान -(भ्रान्ति नाश का)

एक ज्ञान स्वरूप ब्रह्म है, एक जड़ प्रधान (प्रकृति) है, और कुछ ज्ञान (अल्पज्ञानी) जीव है। पूर्णविद्या ब्रह्म का धर्म है। विद्या शून्यता प्रधान (प्रकृति) का। अल्पज्ञता जीवों का। क्योंकि ब्रह्म को कभी भ्रान्ति नहीं होती। वह सर्वज्ञ हैप्रकृति को कभी भ्रान्ति नहीं होती क्योंकि जड़ है। जीव की अल्पज्ञता समस्त प्रपन्च की व्याख्या करने को समर्थ है, क्योंकि जीव अल्पज्ञ होने से भ्रान्ति की सम्भावना रखते हैं। भ्रान्तियाँ अल्पज्ञता और अणुत्व एकदेशियता के कारण है।

भ्रान्ति कई प्रकार की-

1. असत ख्याति (शून्यवादी माध्यमिक बौद्ध)
2. आत्मख्याति (योगाचार बौद्ध)
3. अख्याति (प्रभाकर - मींमांसक)
4. अन्यथा ख्याति (नैयायिक)
5. अनिर्वचनीय ख्याति (शांकरमत)-रज्जू (रस्सी में) साँप का भाव भावरूप से तो सत्य ही था। अतः हम उसको असत्य कैसे कहे ?और सत भी नहीं कह सकते क्योंकि रस्सी साँप नहीं। अतः एक विलक्षण चींज है- न सत है न असत यह अनिर्षचीय है। (इस्लाम वाले भी ईश्वर के विषय में कुछ कहने से इन्कारी है।)
6. सापेक्षता-निरपेक्ष सत्य कोई अर्थ नहीं। यदि सुख की (अपेक्षता) अपेक्षा से दीर्घ है तो किसकी अपेक्षता से हस्व है। तो दीर्घ अनपेक्षिक (बिना अपेक्षा के हुआ। यदि एक पुत्र हो तो उसमें भ्रातृत्व न ही हो सकता। यदि दो हो तो आपस (परस्पर) में भाई-भाई होंगे। (जब अल्ला ही अलग है तब अल्ला कहने, कहाने वाले दो तत्व सिद्ध होते)।

बुद्धि प्रकृति (प्राकृतिक) है या अप्राकृतिक। बुद्धि चेतन है या जड़?(शैतान को किसने बहकाया) (जीव और जड़ का लक्षण तो ठीक है परन्तु जो जड़ रूप पुदगल है वह पाप पुण्ययुक्त कमी नहीं हो सकते, क्योंकि पाप पुण्य करने का स्वभाव चेतन में होता है। .....सं.92/पृ.42)

जो अनादि का नाश मानोगे तो तुम्हारे सब अनादि पदार्थो के नाश का प्रसंग होगा (19/439) ईश्वर और उसकी ईश्वरता का यथार्थ (सही) मूल्यांकन न करने से ही भ्रान्ति संशय होता है। भ्रान्तिनाश वेद के दयानन्द के दृष्टिकोण द्वारा ही सम्भव है। उसे ही स्वीकारें। प्रभु सद् बुद्धि दे।

●●●

www.thearyasamaj.org

किसी की मदद करना नहीं, उसका ढिंढोरा पीटना बुरी बात है –सीताराम गुप्ता

दान देना, नेक काम करना अथवा किसी की मदद करना बहुत अच्छी बात हैं लेकिन कहा गया है कि नेकी कर दरिया में डाल।इसका अर्थ यही है कि नेक काम करके उसे भूल जाओ। इसके कई निहितार्थ हो सकते हैं। पहला तो ये कि दान देकर या नेक काम करके उसको जताना अहंकार का प्रदर्शन करना ही है। इसीलिए अहंकार अथवा कर्ता भाव से बचने के लिए अच्छा काम करने के बाद बार–बार उसका बखान करना उचित नहीं। ये भी कहा जाता है कि यदि एक हाथ से दान दे रहे हो तो दूसरे हाथ को भी पता नहीं लगना चाहिए। यदि आप किसी की कुछ मदद कर रहे हो अथवा दान दे रहे हो तो ये कार्य अत्यंत गोपनीयता से ही करना चाहिए क्योंकि अत्यधिक प्रदर्शन से दान लेने वाले के स्वाभिमान को ठेस पहुँच सकती है। यहाँ एक दम अकर्मण्य लोगों व भिखारियों की बात नहीं हो रही है। यही कारण है कि लोग प्रायः परिचितों की मदद करने अथवा उन्हें दान देने की बजाय अपरिचितों को ही दान देना पसंद करते हैं। यही कारण है कि आज देश में दान लेने वाले अपरिचित लोगों अथवा भिखारियों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। पहले दान देना एक सात्त्विक कर्म था लेकिन आज दान लेना अथवा भीख माँगना एक पेशा बन गया है और साथ दान देना या मदद करना आडंबरपूर्ण हो चुका है। यह भी व्यावसायिक हित साधने का ज़रिया बन गया है।

सामाजिक मान्यता के अनुसार यह स्वाभाविक ही है कि दान लेने वाले से दान देने वाला श्रेष्ठ माना जाता है। इसी तरह से मदद लेने वाले से मदद करने वाला बड़ा समझा जाता है। इसका सीधा सा अर्थ है कि जिसके साथ भलाई की जाती है अथवा जिसे दान दिया जाता है वह इस अहसास से दब जाता है कि किसी ने उसकी मदद की है अथवा उस पर किसी का कर्ज हो गया है और अब जिंदगी भर उसे व उसके परिवार को दान देने वाले अथवा मदद करने वाले व उसके परिवार के सामने सर उठाने की हिम्मत नहीं हो सकेगी। इस वजह से वह दुखी होकर छटपटाता है। इसीलिए जो स्वाभिमानी व्यक्ति होते है। वे विषम से विषम परिस्थितियों में भी प्रायः किसी की मदद स्वीकार नही करते। हाँ किसी से उधार या कर्ज लेना अलग बात है। एक खुदार आदमी तो मित्रों व परिचितों से क़र्ज़ लेना भी मुनासिब नहीं समझता। कारण यही है कि किसी भी रूप में मदद करने वाले व्यक्ति का हाथ हमेशा ऊपर रहता है।

इसके विपरीत जो लोग आसानी से किसी की मदद या दान ले लेते हैं वे उन लोगों से कमतर माने जाते हैं जो दान नहीं लेते। सहजता से दान स्वीकार कर लेना भी हमारे व्यक्तित्व व चरित्र का कमज़ोर पक्ष ही माना जाता है और ऐसे लोगों का आचरण भी विचित्र होता है। लगता है वे दान लेने में भी जैसे अहसान कर रह हों। आज दान लेने वाले प्रफेशनल लोग उलटा देने वाले पर अहसान जताते हैं कि हमारे दान लेने की वजह से ही उन्हें पुण्य मिल सकेगा। पैसे व वस्तुओं के बदले मानों वे ही मोक्ष दान कर रहे हों।दान की यह स्थिति मेरी समझ से बाहर है। मानव समाज में एक वर्ग दान लेने वाला हो और अन्य दान देने वाले हों इसका औचित्य समझ में नहीं आता। एक डॉक्टर व मरीज़ का रिश्ता तो समझ में आता है लेकिन एक दान लेने वाले और एक दान देने वाले का रिश्ता समझ में नहीं आता। वास्तव में इसके पीछे उन असंख्य अकर्मण्य लोगों का षड़यंत्र मात्र है जो लोगों को मुक्ति का लालच दिखाकर, उन्हें धर्माध बनाकर या धर्म से डराकर दान के रूप में उनसे रूपये– पैसे व अन्य वस्तुएँ ऐंठते रहते हैं। विवाहादि मांगलिक अनुष्ठान, पूजा–पाठ, जागरण व चौकी वगैरा के मौकों पर दान–दक्षिणा ऐंठने के लिए जिस प्रकार यजमानों व श्रद्धालुओं को मूर्ख बनाया जाता है वह किसी से छुपा नहीं है। वास्तव में इन यजमानों अथवा श्रद्धालुओं में कॉमनसेंस की कमी व वैज्ञानिक दृष्टिकोण का न होना भी दान के इस ग़लत स्वरूप के प्रचार–प्रसार में सहायता करता है।

दान का स्वरूप ठीक न हो तो वह समाज में विकृति पैदा करता है, संबंधों को खराब कर देता है। प्रफेशनल ही नहीं अनप्रफेशनल सामान्य लोग भी दान देने वाले अथवा मददगार के अहसान से बचने के लिए तोड़ ढूँढ ही निकालते हैं। ऐसे लोग दानदाता अथवा मददगार में कमियाँ ढूँढने का प्रयास करते हैं। यदि व्यक्ति आर्थिक रूप से सुदृढ़ है तो उसके व्यापार या व्यवसाय को घटिया साबित करने का प्रयास करते हैं अथवा उसमें व उसके परिवार में चारित्रिक दोष निकालने लगते है। उनके घर परिवार अथवा खानदान को घटिया साबित करने का प्रयास करते हैं। उनकी हर बात में कमी निकालने व हर बात के लिए उनका विरोध करना प्रारंभ कर देते हैं। कही भी अपमान करने का मौका नहीं चूकते। यदि ऐसा मौका नहीं मिलता तो परोक्ष रूप से शारीरिक अथवा आर्थिक नुक़सान पहुँचाने की कोशिश तक करते है। ऐसे में आपसी संबंध खराब होते देर नहीं लगती।

कई लोग प्रत्यक्ष रूप से तो किसी की मदद कर देते हैं लेकिन बाद में कहते फिरते हैं कि हमने तो क़र्ज दिया था जिसे अब वो लौटा नहीं रहे हैं। कमजोर आर्थिक स्थिति वाले रिश्तेदारों व दोस्तों को उपहार भी देते हैं तो ऐसे जैसे भीख दे रहे हों। कई लोग जिन मित्रों अथवा रिश्तेदारों की मदद करते हैं अथवा जिन्हें क़र्ज़ के तौर पर ही कुछ राशि वगैरा देते हैं अन्य मित्रों व रिश्तेदारों के समक्ष उनकी उपेक्षा ओर अपमान करने से नहीं चकते जो कि गलत बात है। यदि आपमें किसी की किसी भी प्रकार से मदद करने की सामर्थ्य है तो मदद करने के बाद धैर्य, शालीनता और संबंधों की गरिमा को बनाए रखना भी अनिवार्य है। याद रखें कि किसी की मदद करने के बाद उससे मिलने वाली खुशी ही उस मदद की सबसे बड़ी क़ीमत है अतः मदद करने के बाद अन्य किसी प्राप्ति की उम्मीद करना बेमानी है। उस नैसर्गिक प्रसन्नता को अपने अंदर स्थापित करने का प्रयास कीजिए। किसी की मदद करना एक स्वाभाविक कर्म है। इसके बिना समाज नहीं चल सकता लेकिन इसके दुष्प्रभावों से बचने के लिए हमें चाहिए कि अच्छा काम करके उसे भूल जाएँ और इस बात का ढिंढोरा पीटते न फिरें कि हमने अमुक व्यक्ति की मदद की है।

अपने कर्मचारियों के प्रति उदार व उत्तरदायी बनना किसी दान से कम नहीं

पिछले दिनों दीपावली के अवसर पर देश के एक प्रतिष्ठित हीरा कारोबारी सावजी ढोलकिया ने अपने कर्मचारियों को गिफ़्ट के रूप में फ़्लैट्स कारें व कीमती आभूषण देकर एक सनसनी सी फैला दी। इस पर कंपनी के मालिक का ये कहना कि ये सब कर्मचारियों की मेहनत के फलरूपरूप ही संभव हुआ अत्यंत स्वाभाविक है। किसी भी उद्योग अथवा सेवा के क्षेत्र की सफलता उसके कर्मचारियों की मेहनत, ईमानदारी लगन व निष्ठा पर ही निर्भर करती है इसमें संदेह नही। यहाँ यह कहना भी अत्यंत प्रासंगिक है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। दुनिया में कोई ऐसा अरबपति या खरबपति नहीं जिसने अकेले के दम पर अकूत संपत्ति अर्जित की हो। हर उद्योग, व्यक्ति अथवा संस्थान के विकास, उन्नति व समृद्धि में असंख्य लोगों का प्रत्यक्ष व परोक्ष योगदान रहता है लेकिन कितने लोग हैं जो इस बात को समझते हैं और अपने सहयोगियों व कर्मचारियों के लिए वास्तव में कुछ विशेष करने का प्रयास करते हैं?

कहा गया है कि आप जिसकी पूजा या प्रशंसा करते हैं उसी जैसा बनिए।यदि आप कर्मचारियों को गिफ़्ट के रूप में फ़्लैट्स, कारें व कीमती आभूषण देने की घटना की प्रशंसा कर रहे हैं तो कोरी प्रशंसा की बजाय आप भी अपने सामर्थ्य के अनुसार वैसा ही बनने का प्रयास कीजिए क्योंकि तभी उस प्रशंसा की सार्थकता हे। जब हमें कोई उपहार या सुविधा मिलती है तो हम बहुत खुश होते हैं लेकिन क्या कभी हमारी वजह से भी किसी को ऐसी ही खुशी मिली है इस पर कम ही विचार करते हैं। हर व्यक्ति एक बड़ा उद्योगपति या व्यापारी अथवा बहुत पैसे वाला नहीं हो सकता और न ही हर व्यक्ति के यहाँ बहुत से कर्मचारी ही होते हैं लेकिन हमारे स्वंय एक कर्मचारी अथवा सामान्य पेशेवर होने के बावजूद अनेक स्थायी अथवा अस्थायी व्यक्ति हमारे विकास से जुड़े होते हैं। उनके सहयोग के बिना हम एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ सकते।

विकास व समृद्धि ही नहीं कुछ लोगों का जीवन व अस्तित्व तक अन्य लोगों के जीवन व अस्तित्व पर निर्भर करता है। क्या ऐसे लोगों की खुशी के बारे मे सोचना हमारा दायित्व अथवा कर्त्तव्य नहीं?दायित्व अथवा कर्त्तव्य छोड़िए क्या उनके ऋण से उऋण हमारे लिए अनिवार्य नहीं?हम जिन लोगों के सहयोग से लगातार आर्थिक उन्नति करते रहते हैं, अच्छे घरों मे रहते हैं, साफ व स्वच्छ बने रहते हैं, जीवन का हर आनंद उठाते है आख़िर वो ही क्यों ज़िंदगी भर हर तरह से बेबस व लाचार बने

रहते हैं?क्यों उनके चेहरों पर कभी मुसकान नहीं दिखलाई पड़ती?पक्की छत तो दूर क्यों कभी उनके झोंपड़ों के मरम्मत तक नहीं हो पाती?दूसरों की उतरन के अतिरिक्त क्यों कभी नए कपड़े उनके तन पर सुशोभित नहीं होते?क्यों कभी वो अपने पैर सही नाप का जूता नहीं ख़रीद सकते और हमेशा लेगड़ाते हुए से चलने को विवश होते हैं?क्यों उनकी चप्पलें हमेशा टूटी ही रहती हैं?महान दानवीर करण का अनुकरण करने से पहले क्या इस पर विचार करने की ज़रूरत नहीं है?क्या हमारी उपेक्षा अथवा उदासीनता या दायित्वबोध में कमी ही तो इसका कारण नही?वास्तव में तथाकथित धर्म के नाम पर कुछ राशि दान में देकर हम अपने सामाजिक, आर्थिक व अन्य अपराधों व संकटों से मुक्त होने का प्रयास करते हैं जो ढोंग मात्र है।

वैसे तो हममे से कई सामान्य व्यक्ति भी हज़ारों–लाखों रूपये दान–दक्षिणा में लुटा देते है। लेकिन एक मजदूर को उसकी मजदूरी देने के मामले में हम बड़े हिसाब–किताब वाले बन जाते हैं। कार्य के दौरान कुछ नुक़सान हो जाने पर उसकी मजदूरी में से पैसे तक काट लेते हैं। हम हिसाब के बड़े पक्के होकर भी वास्तव में कच्चे ही होते हैं। हम अल्पकालीन लाभ देखते हैं दीर्घकालीन लाभ नहीं देखते। हम दो पैसे का फायदा देखते हैं ज़िंदगी का नहीं। हम भौतिक लाभ देखते हैं मानसिक संतुष्टि से उत्पन्न आध्यात्मिक लाभ नहीं। ये ठीक है कि हम हर आदमी पर दौलत नहीं लुटा सकते लेकिन जो लोग हमसे जुड़े हैं हमारे कर्मचारी अथवा सहायक हैं कम से कम उनके जीवन में तो कुछ सुधार ला ही सकते हैं।

हम अपने सहयोगियों अथवा नौकरों को उनके कार्य अथवा सेवा के लिए पूरी मजदूरी अथवा वेतन के साथ–साथ अन्य सुविधाएँ दे सकते है। कीमती फ़्लैट्स कारें व हीरे के आभूषण न सही लेकिन उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना, किसी भी प्रकार का रोग होने पर फौरन उपचार करवाना, उन्हें अच्छे कपड़े उपलब्ध करवाना, व उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना ऐसी कुछ बातें हैं जो हमें एक डायमंड किंग न सही एक डायमंड ज़रूर बना सकती हैं। अगली बार किसी भी अवसर पर दान–दक्षिणा के रूप में नकारा लोगों पर पैसा लुटाने की बजाय वो सारी राशि अपने घर के काम करने वाले सहयोगियों अथवा नौकरों पर ख़र्च कर दीजिए। इससे आपको व आपके सहयोगियों अथवा नौकरों को जो खुशी मिलेगी उससे ही आपके घर–परिवार को वास्तविक आध्यात्मक लाभ मिल सकेगा। जीवन में संतुष्टि व अच्छे स्वास्थ्य के साथ–साथ आर्थिक समृद्धि भी सुनिश्चित ही जाएगी।

ए.डी.106–सी, पीतमपुरा,दिल्ली

www.thearyasamaj.org

पूर्णता की ओर अग्रसर हम सब

पं0 उम्मेद सिंह विशारद

संसार के सृष्टिक्रम को चलाने की ईश्वर की अद्भुत व्यवस्था है। सृष्टिक्रम का प्रत्येक कार्य नियमित और निर्धारित समय से हो रहा हैं। ईश्वर की निश्चित व्यवस्थानुसार व विज्ञान के अनुसार सृष्टिक्रम चल रहा है। ज्ञान विज्ञान का समन्वय से संचालन हो रहा है। युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे, उन्होंने ईश्वरीय व्यवस्थानुसार व सृष्टि क्रमानुसार विज्ञान के अनुसार संसार को सत्य ज्ञान कराया है।

पूर्णता को प्राप्त करना है मानव जीवन का परम लक्ष्य है। न केवल चेतन समुदाय अपितु सृष्टि का प्रत्येक कण इसके लिये लालयित और गतिशील है। भौतिक जीवन में जिसके पास स्वल्प सम्पदा है वह अधिक की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील है। बड़े–बड़े सम्राट अपनी इस अपूर्णता को पाटने के लिये दूसरे साम्रज्यों को लूटते रहते है। लगता है संसार का हर प्राणी साधनों की दृष्टि से अपूर्ण है, और सभी पूर्णता को प्राप्त करना चाहते हैं।

इतिहास का विद्यार्थी अपने आपको गणित या विज्ञान में शून्य पाता है। भुगोल का संगीत में, वकील डाक्टरी में, यानि जीवन की विद्या में हर कोई अपूर्ण है और हर कोई अगाध ज्ञान का पंडित बनने को तत्पर दिखाई देता है। नदियां पूर्णता को प्राप्त करने के लिये सागर की ओर वृक्ष आकाश की ओर, धरती भी स्वयं न जाने किस ग्रनतव्य की ओर अधर में आकाश में भागी जा रही है। अपूर्णता की दौड़ में समूचा सौर मण्डल उससे परे का अदृश्य संसार में भी सम्मलित है। पूर्णता प्राप्त करने की बैचैनी न होती तो सम्भवतः विश्व ब्रह्माण्ड मे रती भर सक्रियता न होती, सर्वत्र नीरस व सुनसान पडा रहता, न समुद्र उबलता न मेघ बरसते न वृक्ष उगते, न तारागण चमकते और न वह विराट की प्रदिक्षिणा में मारे मारे घूमते।

जीवन की सार्थकता पूर्णता प्राप्ति में है, इसका तात्पर्य यह हुआ कि अभी हम अपूर्ण है और असत्य और अन्धकार में है। हमारे सामने मृत्यु मुंह वाये खाड़ी है। हर कोई अपने आप को अशक्त और असहाय पाता है, अज्ञान के अन्धकार में हाथ पैर पटकता रहता है।

इस अपूर्णता पर जब कभी विचार आता है तब एक तथ्य सामने आता है और वह है परमात्मा अथार्त एक ऐसी सर्वोपरि सर्वक्तिमान सत्ता जिसके लिये कुछ भी अपूर्ण नहीं है वह सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी सर्वद्रष्टा नियामक और एक मात्र अपनी इच्छा से सम्पर्ण सृष्टि में संचरण कर सकने की क्षमता में ओत प्रोत है।

पूर्णमद पूर्णामिंद पूर्णातपूर्ण मुदच्यते–।
पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्णमेवावशि......... पुनरापत–।
ओं पूर्णदर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत–।
वस्नेव विक्रीणा वहा इश्मूर्जभातक्तो–।। यजु0 3–49

अर्थात पूर्ण परब्रह्म परमात्मा से पूर्ण जगत पूर्ण मानव की उत्पति हुई। पूर्ण से पूर्ण निकाल देने पर पूर्ण ही शेष रह जाता है।

जिस प्रकार नदी का एक किनारा समुद्र से जुड़ा रहता है और दूसरा किनारा उससे दूर रहता है, दूर रहते हुए भी नदी समुद्र से अलग नहीं है। नदी को जल समुद्र द्वारा प्राप्त होता है और पुनः समुद्र में मिल जाता है। जगत उस पूर्ण ब्रह्म से अलग नहीं है। मनुष्य उसी पूर्ण ब्रह्म से उत्पन्न हुआ इसलिए वह अपने में स्वंय पूर्ण है। यदि इस पूर्णता का भान नहीं होता, यदि मनुष्य कष्ट और दुःखों से त्राणं नहीं पाता तो इसका मात्र कारण उसका अज्ञान और अहंकार में पड़े रहना ही हो सकता है। इतने पर भी पूर्णता हर मनुष्य की आन्तिरिक अभिलाषा है और वह नैसर्गिक रूप में हर किसी में विद्यमान रहती है।

प्रगति और पूर्णता का लक्ष्य बिन्दु 'देवत्व प्राप्त करना है।

क्षुद्रता और परिधि को तोड़ कर पूर्णता प्राप्त करना लेना हर किसी के लिये सम्भव है। मनुष्य की चेतनसत्ता में वह क्षमता मौजूद है, जिसके सहारे वह अपने स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीरो को विकसित कर देवत्व को प्राप्त कर सकता है। अष्टचक्रो एवं पंच कोशो में समाहित विलक्षण क्षमताओं सिद्धियों का स्वामी बन सकता है। यही क्षमता को प्राप्त करना देवत्व की ओर जाना है। जबकि क्षमता की दृष्टि में वह उतना ही परिपूर्ण है जितना उसका सृजेता। इस चरम लक्ष्य की ओर ज्ञात अज्ञात रूप से हर कोई अग्रसर है।

विकास इस सृष्टि की सुनियोजित व्यवस्था है। पदार्थ और प्राणी अपनी अपनी आवश्यकता के अनुरूप अपने अपने ढंग से विकास कर रहे हैं। मनुष्य में देवत्व के उदय की यह सम्भावना विचार विज्ञान एवं ब्रंह्म विद्या की परिधि में आती है। व्यक्तित्व का परिष्कार अध्यात्म जगत का परम पूरूषार्थ माना गया है।

"मै" के जानने में ही ज्ञान की पूर्णता है

मैं के साथ मेरा है। जो घमन्ड के साथ कहता है कि मैंने ऐसे किया, ऐसा कर दूंगा। इस न वर भारीर को शोभा नहीं देता। इस शरीर का वास्तविक मालिक ईश्वर है। हम दुनिया को जानने की कोशिश में लगे रहते हैं और संसार के साथ सम्बन्ध कायम करने में लगे रहते हैं। किन्तु स्वंय अपने आपको जानने का कभी प्रयत्न नही करते। हम इस साकार ईश्वर के अंग है साकार से हमारा अभिप्रायः प्रकृति के अंग है, यह सारा विश्व हमारा भारीर है। इस ज्ञान का नाम ही मै है। मैं है वह परमात्मा सत्ता। इस सत्ता को जानना ही आस्तिकता है। अतः अपने आप को जानकर अपना स्वंय का ज्ञान होना आवश्यक है। मैं क्या हूँ?मैं कौन हूँ? मैं क्यों हूँ?इन छोटे से प्रश्न का समाधान न कर सकने के कारण "मैं को कितनी विषम विडम्बनाओं में उलझना पड़ता है।

यदि मैं भारीर हूँ तो उसका अन्त क्या है? लक्ष्य क्या है?परिणाम क्या है? मृत्यु–मृत्यु–मृत्यु।

क्या वास्तव में "मैं" की मृत्यु हो जायेगी। "नहीं" क्योंकि जब तक शरीर में आत्मा रहती है तभी तक मनुष्य मैं का उच्चारण करता रहता हैं।जैसे ही आत्मा भारीर से पलायन हुई मै का मेरे का सम्बोधन भी समाप्त हो जाता है।

आत्मा को जानिए–

आत्मा ही जरा–मरण, भूख प्यास समस्त भय सन्देह संकल्प–विकल्पों से रहित नित्य मुक्त अजर, अविनाशी तत्व है। उसे जान लेने पर ही मनुष्य समस्त भय शोक चिन्ता कलेशों से मुक्त हो जाता है। आत्मा सर्व व्यापी नित्य तत्व है। आत्मा ही मानव जीवन का मूल सत्य है। आत्मा के पटल पर ही संसार और दृष्य जीवन का छाया नाटक बनता बिगड़ता रहता है।

अध्यात्मा ब्रंह्म (वृ0 उप्र0) सर्वव्यापी विराट आत्म सत्ता ही ब्रह है। ऐसा उपनिषिदकार ने अपनी अनुभूति के आधार पर कहा है। जिसने आत्मा को जन्म लिया उसने ईश्वर को जान लिया आत्म तत्व जब जगत देह इन्द्रिय तथा संसार के पदार्थो को प्रकाशित करता है। जो अनेक रूपों में दिखाई देता है। जैसे जल की बूदें समुद्र पर गिरते समय अलग अलग दिखाई देती है, किन्तु गिरने से पूर्व और गिरने पर वह अथाह सिन्धु के रूप में होती है।

सत–चित–आनन्द पूर्णता की ओर ले जाते हैं।

अतः परमात्मा के अनेक नामों में से एक नाम है, सचिदानन्द सत् अथार्थ यथाथर्ता। यथाथर्ता का अर्थ सत्य को जानना, ऋत सत्य का ज्ञान होना और अपने जीवन को सत्य मार्ग अर्थात ईश्वरीय आज्ञानुसार चलाना, सतपथ कहा जाता है।

चितः– अर्थात चेतना ही मनुष्य का स्वरूप है। उसी के साथ कठिन और जटिल उल्झनों का निर्माता एवं समाधान से जुड़ा हुआ है। सदैव सत्य की ओर चित्त को ले जाना ही समस्याओं का समाधान है।

आनन्द – जिसमें प्रति प्रसन्नता न्यून या अधिक आनन्द का आधार कारण रूप प्रकृति है बस प्रकृति से ऊपर उठ कर चित्त को सचिदानन्द में सदैव लगा देने पर ही परमानन्द की अनुभूति होती है।

अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमें वेदों की शिक्षा देकर धर्म, अर्थ काम और मोक्ष के मार्ग पर चल कर पूर्णता की ओर जाने का मार्ग बताया हैं

उपसंहार–

मानव को सदा अपने को सत्य ज्ञान में अपूर्ण , सतकर्म में अपूर्ण , सत धर्म में अपूर्ण सत व्यवहार में अपूर्ण सत ईश्वर भक्ति में अपूर्ण समझना चाहिए। इससे उसमें अहंकार व अभिमान की निवृती होती है। और वह सत्य पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। वेद और वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ और आर्य समाज के सिद्धान्त यही शिक्षा देते हैं।

वैदिक प्रचारक गढ़ निवास
मोहकमपुर
देहरादून
मो0 9411512019

वैदिक संस्कृति ज्ञानवर्धिनि प्रतियोगिता सम्पन्न

वैदिक संस्कृति उत्थान न्यचास रजि. और आर्य समाज खेड़ा अफगान जनपद सहारनपुर द्वारा आयोजित दोनों पूर्व में कराई गई वैदिक संस्कृति ज्ञानवर्धिनि प्रतियोगिताओं में कक्षा ६ से १२ तक का परिणाम एवं पारितोषिक दि. १३.११.१६ को घोषित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। यज्ञ के यजमान डॉ. प्रमोद कुमार, श्री नेम चन्द्र गर्ग, श्री निश कुमार रहे यज्ञ आचार्य विद्या भानु शास्त्री एवं श्री हरीदत्त जी शास्त्री के पौरोहित्य में हुआ।

कार्यक्रम का संचालन न्यास के सचिव वेदभूषण गुप्त ने किया अन्त में आर्य समाज खेद अफगान के प्रधान आदित्य प्रकाश गुप्त ने कहा छात्र-छात्राओं को अपने जीवन में भारतीय संस्कृति को धारण कर अपने मानव जीवन को सफल बनायें। सभी आर्य जन देश में सभी स्थानों पर वैदिक ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिताओं कर पुण्य के भागी बने। सभी आगन्तुक विद्वानों, आर्यजनों, अध्यापको का धन्यवाद दिया बच्चों को अशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर डॉ. अशोक जी, हरी सिंह सालारपुर, बबीता शर्मा, सन्नी, प्रीती शर्मा, अजब सिंह आर्य, राजपाल सिंह, कुंवरपाल सिंह, वीरेन्द्र गुप्ता, शशीकान्त अंगद सिंह, श्रीराम यशपाल, दीपेश कुमार, सन्दीप कुमार, राजेश कुमार, मा.गोधन सिंह, महीपाल, चरन सिंह, जुगमन्द्र कुमार, गौरव कुमार, अनिल कुमार अध्यापक, सुमित कुमार, लवी कुमार, ओम पाल आदि उपस्थित थे।

www.thearyasamaj.org

चढ़ अग्निपंख उड़ गये राष्ट्र ऋषि कलाम

सर्व दिशा दिशान्तर से सीमावरत कोई भूभाग देश कहलाता है। जब इस पर किसी पालन–अनुरक्षण कर्ता राजा या शासक का प्रकाश परिव्याप्त होता है, तो वही भूभाग एक राज्य के रूप में परिणत हो जाता है, और इसमें जब प्रकृष्ट रूपेण संस्कारों से जन्म लेने वाली प्रजा की पदचाप होती है, तभी इसे राष्ट्र का अभिधान मिलता है, क्योंकि निरन्तर दान करने वाले को 'रा कहा जाता है, जहाँ ये स्थित हों वहीं राष्ट्र कहलाता है। 'राती' अर्थात दानकर्ता परोपकारी तथा 'अराती' कृपण स्वार्थी कहलाते हैं। अग्निभीले पुरोहितम्' (ऋग्वेद 1.1.1.) अर्थात सर्वाग्र हितकारी अग्नि की उपासना करने से ही कोई व्यक्ति मननकर्ता ऋषि बनता है। 'अग्निः पूर्वैभिर्ऋषिरीडयो नूतनैरूत' (ऋग्वेद1.1.2) अर्थात प्राचीन और अर्वाचीन सभी ऋषि अथवा चेतना सम्पन्न मानव अग्नि की उपासना करते चले आये हैं विकास के सोपान दर–सोपान चढ़ने के लिए आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों की अग्नियाँ मनुष्य का मार्ग प्रशस्त करती हैं। इस सम्पूर्ण चित्रण के अन्तर्गत वर्तमान मे कोई चित्र उभर कर नयनाभिराम बनता है, तो वहा डॉ. अब्दुल कलाम का ही विचित्र व्यक्तित्व प्रत्यक्ष होता है। जो मनुष्य सब विद्याओं को पढ़ के औरों को पढ़ाते हैं तथा अपने उपदेश से सबका उपकार करने वाले हैं वा हुए हैं वे पूर्व शब्द से, और जो कि अब पढ़ने वाले, विद्याग्रहण के लिए अभ्यास करते हैं, वे नूतन शब्द से ग्रहण किये जाते हैं और वे सब पूर्ण विद्वान शुभगुण सहित होने पर ऋषि कहलाते है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रस्तुत इस परिभाषा के अन्तर्गत एक डॉ.कलाम ही क्या, डॉ होमी जहाँगीर भाभा तथा डॉ. विक्रम साराभाई प्रभृति अनेक राष्ट्रचेता ऋषि आ जाते हैं। रामायण काल की बात ही क्या! महाभारत काल से पूर्व तक आर्यावर्त के अतिरिक्त विश्व में अन्यत्र कोई इतिहास नहीं मिलता। इन दोनों युगों में विश्वामित्र–परशुराम प्रभृति अनेक महान ऋषियों का वर्णनमिलता है, जिनसे योद्धा राजकुमार अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा ग्रहण करते थे, उनमें प्रमुख आयुध प्रक्षेपणास्त्र ही हुआ करते थे। 'कर्मयोगी कलाम' ग्रन्थ से प्रो. अविज्ञात की यह पंक्तियाँ उल्लेखनीय है। 'यदि भारत विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा पछाड़ा गया और इसलिए जीवन की दौड़ में पिछड़ गया तो इसका एकमेव कारण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारी उपेक्षापूर्ण दृष्टि थी। यह नहीं कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हम अक्षम थे परंतु हमारी दृष्टि कहीं और थी। वह सामरिक प्रौद्योगिकी, युद्धक प्रौद्योगिकी, लड़ाकू प्रोद्योगिकी पर नही थी। आधुनिक प्रौद्योगिकी का इतिहास हमें बताता है कि यह युद्ध–आधारित है। यह ठीक है कि प्रौद्योगिकी को नागरिक सुविधाओं तथा शान्तिपूर्ण विकास के लिए भी प्रयोग किया जाता है, परन्तु पहल युद्ध से होती है। पहले पत्थर मिसाइल की भांति आत्मरक्षा अथवा शिकार के लिए फेंके गये, चकमक पत्थर से आग की ईजाद बाद में हुई। पहले तीर–कमान बना, कमान की टंकार से इकतारे का संगीत बाद में सुना गया। पहले मिलिटरी इंजीनियरी बनी, सिविल इंजीनियरी बाद में आई और फिर मैकेनिकल विद्युत इलेक्ट्रॉनिकी इसी क्रम मे आई।चाहे यह बाबर का तोपखाना रहा हो या अल्फेड नोबल की बारूद हो या आज की परमाणु शक्ति तथा उपग्रह प्रक्षेपण– ये सभी प्रौद्योगिकियाँ युद्ध के लिए पहले विकसित हुई, व्यापार तथा विकास के लिए उनका उपयोग बाद में हुआ। यही कहानी दूरभाष तथा सूचना प्रौद्योगिकी की है। भारत शान्तिमय जीवन की अभिलाषा से ग्रस्त इन युद्ध तकनीकों के प्रति उदासीन रहा यही उसके गुलाम हो जाने तथा गुलाम ही बने रहने का कारण बना। अतः आत्म रक्षा के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी और शांतिपूर्ण विकास के लिए उसे परिस्थितियों के अनुकूल ढालकर विकसित की गई नवप्रवर्तशील प्रौद्योगिकी को ही कलाम साहब इस महालक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपरिहार्य मानते हैं।'

प्रो. अविज्ञान लेखक के समक्ष दिन–प्रतिदिन विज्ञात रहे हैंऔर मेरे चिन्तन को नितप्रति परिमार्जित करते रहने के कारण मेरी प्रेरणा के संवाहक बने रहे हैं।डॉ कलाम की उक्तानुसार क्रांति दृष्टि ही उन्हें राष्ट्र ऋषि की महनीयता प्रदान करती है। कोई भी वैज्ञानिक या क्रान्तिदृष्टा शोध संवाहक अपनी प्रयोगशाला की परिधि में छिपा रहता है, राष्ट्र में उसके आविष्कार के प्रचार होने पर ही उसका परिचय हो पाता है। अपनी उपलब्धियों के अनेक राष्ट्रीय उपहार–अलंकरण प्राप्त करने के बाद भी सर्वांश में उनके विख्यात होने का श्रेय अलीगढ़ के पक्ष में जाना चाहिए, क्योंकि यह प्रक्रिया यहीं के एक प्रबुद्ध नागरिक श्री लक्ष्मण प्रसाद ने सन 2000 ई.में राष्ट्र– स्तरीय नवाचार समारोह का भव्य आयोजन कर प्रारम्भ की। तबसे 2014 तक अनवरत यह दिवस अलीगढ़, लखनऊ एवं विदेश में भी उनके मित्र शिक्षाविद् डॉ जगदीश गांधी के सौजन्य से अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुका है। जैसे डॉ कलाम पद्म भूषण, पद्म विभूषण एवं भारत रत्न के अलंकरण से आलोकित होते रहे हैं, वैसे ही प्रसाद जी भी वयस्वी भूषण, वयस्वी गौरव से लेकर प्रान्तीय व राष्ट्रीय सम्मान विज्ञानरत्न आदि से विभूषित होते रहे हैं यह स्वाभाविक भी है– 'मेहदी बाटनबारे को लगे मेंहदी को रंग।' प्रसाद जी के प्रेरणा–प्रभाव में अलीगढ़ के अनेक शिक्षा केन्द्र संचालित हो रहे हैं। जहाँ सीबी गुप्ता सरस्वती विद्यापीठ की स्थापना के दूसरे वर्ष में ही डॉ कलाम का पदार्पण होता है और ग्रामीण क्षेत्र में वे इसकी प्रगति व स्तर को देखकर प्रफुल्लित हो उठते है, वही दूसरी शिक्षण संस्था–विजडम पब्लिक स्कूल प्रतिवर्ष डॉ कलाम के जन्मदिवस 15 अक्टूबर को 'नवाचार दिवस' के रूप में वृहत भव्यता के साथ मनाता चला आ रहा है। विद्यालय–प्रबन्धन की जागरूकता प्रशंसनीय है। जब तक पूरे भारत को ठीक से पता भी नहीं चल पाया था कि डॉ कलाम का हदयाघात से निधन हो गया है, इस विद्यालय ने एएमयू सहित महानगर के शिक्षाविद्, उपकुलपतियों वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, समाजसेवियों की एक बड़ी सभा आयोजित कर श्रद्धांजलि प्रदान की। संस्था के अध्यक्ष श्री पीके गुप्ता ने अपने अश्रुपूरित नेत्रों से नया बना विशाल सभागार डॉ कलाम के नाम समर्पित कर दिया।

सब जानते हैं कि डॉ कलाम का जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम् धनुषकोडी के परिवेश में एक निर्धन किन्तु स्वाभिमानी धर्मनिष्ठ परिवार मे हुआ था। उन्हें कुरान एवं गीता दोनों ही प्रिय थे। वे तमिल,संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषाओं में दक्ष थे। स्वाभाविक है कि उन्होंने कुरान तमिल में पढ़ी होगी और गीता को उसकी मौलिक भाषा में पढ़ते होंगे। उनके उदारमना पिता जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम को नमाज पढ़ते समय ब्रह्माण्ड का एक हिस्सा बन जाते हो जिसमें दौलत, आयु जाति या धर्म–पन्थ का भेदभाव नहीं रहता।' कृष्ण की गीता का वाचक उनके पांचजन्य घोष के साथ–साथ उनके चक्रसुदर्शन एवं बांसुरी वादन पर विमोहित हुए बिना, भला कैसे रह सकता है! इसीलिए तो उन्हें प्रक्षेपणास्त्र के साथ–साथ रूद्रवीणा सदैव आकर्षित करती रही है।

उपसंहार पर आते हुए 'अग्निपंख का स्पष्टीकरण समुचित प्रतीत होता है। डॉ. कलाम ने स्वंय ही अपनी आत्मकथा को wings of fire तथा Ignited mind (अग्नि की उड़ान तथा तेजस्वी मन) नामक ग्रन्थों के रूप में प्रकट किया है। अग्नि जो अग्रणी होती है, ज्ञान,गमन एवं प्राप्ति उसकी फलश्रुति होती है। रामेश्वरम की गहनताम सिन्धु की जलराशि की पावन पंक से उपजता है– एक अति पुनीत पंकज अर्थात कमल जो सदैव सूर्य मुखी होता है और उसे मिलते हैं ज्ञान विज्ञान के पंख जो उसकी सूर्य की ओर उड़ान में सहायक होते है। जैसे सागर जल से मेघ बनते हैं और उसके गहरे तट से हजारों फीट ऊपर उड़कर मेघालय की रचना कर देते हैं, वहाँ शीतल श्वेत सुदृढ़ शिलांग के प्रौद्योगिक उच्च शिक्षण संस्थान में विद्यमान सुसज्जित छात्र एवं शिक्षकगण स्वागत ही कर पाते है कि धरतीमाता अपने वर्चस्वी पुत्र को अपनी गोद मे समेट लेती है और वेदमाता कह उठती है– 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्यां।' इस सूर्यास्त की बेला में पंकज सूर्य का समर्थन किये बिना नहीं रह सकता है। ढ़ाका बांग्लादेश में कभी उन्होंने छात्रों को यही सीख दी थी 'अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो, तो सबसे पहले तुम सूरज की तरह जलो, सपना वह नहीं, जो तुम सोते हुए देखते हो, सपना वह है, जो तुम्हें सोने न दे। महाप्रयाण की बेला में प्रक्षेपणास्त्र पुरूष, राष्ट्रपति, भारत रत्न, राष्ट्रऋषि डॉ .कलाम तुमको प्रणाम! प्रणाम! प्रणाम'!

अलीगढ़–202001

आर्य समाज मरुआ सुमेरपुर हमीरपुर उ.प्र. का 40वाँ वार्षिकोत्सव एवं विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज करुआ सुमेरपुर का ४०वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ११ से १४ नवम्बर, २०१६ तक स्थानीय रामलीला मैदान में बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें कई वैदिक विद्वानों ने पधार कर अपने उपदेशामृत की वर्षा की जिनमें प्रमुख रूप से आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी नजीबाबाद बिजनौर अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य आनन्द पुरूषार्थी होशंगाबाद म.प्र. पं. सत्यपाल सरण भजनोपदेशक देहरादून तपोनिष्ठ स्वामी रामानन्द जी पठोरी, कु. ललिता आर्या भजनोपदेशिका सहारनपुर श्री हरी सिंह 'हरी' भजनोपदेशक सहारनपुर आदि थे। प्रतिदिन प्रातःकाल वेलामेविश्व कल्याण महायज्ञ, भव्य यज्ञशाला जो ऋण संकुल से बनाई गई थी मध्यान्ह एवं रात्रिकालीन बेला में विद्वानों के उपदेश भजनोपदेश कार्यक्रम चलता रहा। प्रथम दिवस उद्घाटन समारोह में नगर पंचायत की अधिशाषी अधिकारी कु. नीतू सिंह द्वारा ओ३म् ध्वजा रोहण से सम्पन्न हुआ तथा कु. नीतू सिंह जी ने प्रमुख यजमान के स्थान में बैठकर यज्ञ में आहुतियां प्रदान कीं।

-आर्य समाज मरूआ,
सुमेरपुर

शोक संवेदना

- आर्य समाज संकराटीला बहादुरगढ़ हापुड़ के प्रधान चौ. सत्यवीर सिंह की माता जी का देहान्त हो गया। २-१२-१६ को शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने घर जाकर शोक संवेदना व्यक्त की।
- आर्य समाज फजलपुर बागपत के विद्वान् सदस्य आचार्य गजराज सिंह के पूज्यपिता जी का स्वर्गवास हो गया २४.११.२०१६ को शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने शोक संवेदना व्यक्त की है आर्य मित्र परिवार की ओर से धैर्य धारण की प्रभु से प्रार्थना है।
- आर्य समाज ढ़ाना में एवं गुरूकुलपूठ में शान्ति यज्ञ किया गया ढ़ाना के ४ युवकों का दुर्घटना में दर्दनाक मृत्यु हो गई थी। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने सभी के परिवारों में जाकर शोक संवेदना व्यक्त की।
- आर्य समाज रायपुर धीरपुर जनपद बदायूँ के आर्य समाज के प्रतिष्ठित सदस्य श्री नन्हे लाल आर्य का हृदय गति रूक जाने के कारण अचानक निधन दिनांक २७.११.२०१६ को हो गया उनकी अन्त्येष्टि (दाह संस्कार) पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार कौलश चन्द्र आर्य व हरि देव मुनि वानप्रस्थी द्वारा किया गया शव यात्रा में अनेक लोगों ने भाग लिया आर्य समाज की अपूर्णनीय क्षति है।

www.thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

८३वाँ वार्षिक समारोह एवं ३७वाँ चतुर्वेद ब्रह्मपारायण म

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय ११६ गौतम नगर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित ८३वाँ वार्षिक समारोह एवं ३७वाँ चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का आयोजन दि. २६ नवम्बर से १८ दिसम्बर, २०१६ तक मनाया जायेगा।

समारोह में मुख्य विद्वान स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री, आ.प्र.सभा उ.प्र., स्वामी देवव्रत सरस्वती सा.आ.वीरदल, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती आ.गु. गोमत, अलीगढ़, श्री धर्मपाल शास्त्री मेरठ, डॉ. सोमदेव शास्त्री मुम्बई, श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय, श्री महावीर मीमांसक, श्री महेश विद्यालंकार, आचार्य धनंजय आ.गु.पौधा, आचार्य जय कुमार आ.गु. मंझावली, आचार्य चन्द्रभूषण अधि.गु.पौंधा, डा. योगानन्द शास्त्री, पूर्व विधान सभा अध्यक्ष, ठा. विक्रम सिंह चौ. जय भगवान जागलान, श्री युधिष्ठिर लाल मुखी यू. एस.ए. आदि पधार रहे हैं।

कार्यक्रम में प्रातः ७:३० से ६:३० तक तथा सायं ३:०० बजे से ६:०० बजे तक दैनिक पारायण यज्ञ होंगे। मध्यान्ह एवं सायं विविध सम्मेलन होंगे। सम्मान समारोह कई विद्वानों का सम्मान किया जायेगा।

स्वर्ण जयन्ती समाराह एवं सामवेद परायण यज्ञ का आयोजन

आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर का स्वर्ण जयन्ती समारोह एवं सामवेद परायण यज्ञ दि. १७ दिसम्बर से २० दिसम्बर, २०१६ तक बड़े धूम-धाम से मनाया जायेगा। समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से सवामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के कार्यवाहक प्रधान डॉ. धीरज सिंह, मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार आदि विद्वान एवं गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं।

कार्यक्रम में दि. १७, १८, १६ दिसम्बर, २०१६ को प्रातः १०:०० बजे से सायं ४:०० बजे तक सामवेद परायण यज्ञ एवं दि. २० दिसम्बर, को सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे।

समस्त आर्य नर-नारियों से निवेदन है कि इस पुनीत समारोह में उपस्थित होकर यज्ञ के भागीदार बनकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

पृष्ठ...३ का शेष....

ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए परम आनन्द को प्राप्त करता है। मोक्ष की अवधि ३१ नील १० खरब ४० अरब है तब तक मोक्ष में रहते हुए परम आनन्द को प्राप्त करता रहता। जीव अधिक अच्छे युग काम करने से मनुष्य योनि को प्राप्त करता है और इसी योनि में जीवन भर निष्काम कर्म करते हुए यानि परोपकार के कार्य करता रहता है वह व्यक्ति मरने के बाद मोक्ष को प्राप्त करता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इसीलिए मनुष्य योनि को सब से श्रेष्ठ व उत्तम योनि माना है और मोक्ष पाने का द्वार भी मनुष्य योनि ही है। अन्य योनियाँ नहीं।

२- वेद-ज्ञान मनुष्य-मात्र का विधान है- जैसे किसी देश व राष्ट्र का विधान होता है, वह देश व राष्ट्र उसी विधान के अनुसार चलता है तभी वह देश व राष्ट्र में सुख व शान्ति बनी रहती है। देश को चलाने के लिए जैसे विधान जरूरी है वैसे ही सृष्टि को चलाने के लिए वेद-ज्ञान जरूरी है जिसको ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार ऋषियों के हृदय में प्रकाश करके दिया जिसके अनुसार चलने से मनुष्य सुख व शान्ति को स्वयं भी प्राप्त करता है और अन्यों को भी सुखी बनाता है।

३- बुद्धि के लिए ईश्वर ने वेद-ज्ञान दिया : जिस प्रकार ईश्वर ने मनुष्य की पांच ज्ञान इन्द्रियां के लिए पांच तत्व दिये जिनके सहारे वह अपना जीवन चलाता है। जैसे आँख के लिए अग्नि ही जिसके प्रकाश से आँखे रूप को देखती हैं। कानों के लिए आकाश बनाया जिसके सहारे वह शब्द सुनता है। नाक के लिए पृथ्वी बनाई जिससे वह गन्ध की ग्रहण करता है। जिव्हा के लिए पानी बनाया जिससे वह रस का अनुभव करती है और त्वचा के लिए हवा बनाई जिससे वह स्पर्श का अनुभव करती है। यह पाँचों तत्व ईश्वर ने सृष्टि बनाने के साथ ही मनुष्यों के लिए बना दिये थे। इसी प्रकार बुद्धि के लिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेद-ज्ञान दे दिया जिसके अनुसार चलने से वह अपने जीवन को उन्नत व सुखी बना सके। यदि ईश्वर वेद-ज्ञान न देता तो बुद्धि अपना कार्य नहीं कर पाती और उसका बनना व्यर्थ हो जाता। वेदों को पढ़कर मनुष्य बुद्धि से चिन्तन व मनन करता है और अपने जीवन को उन्नत व सुखी बनाता है। यह बात भी सत्य है, यदि ईश्वर मनुष्य उत्पत्ति के आरम्भ में वेद-ज्ञान न दिया होता तो मनुष्य पशुवत् ही रह जाता।

४- किसी मशीन को बनाने के बाद वैज्ञानिक सूचि-पत्र बनाता है - एक वैज्ञानिक यदि कोई मशीन बनाता है तो उस मशीन का कैसे प्रयोग किया जावे। खराब होने से कैसे ठीक किया जाये, यह सब बातें वैज्ञानिक एक लघु पुत्रिका में लिखकर अपने खरीददार को देता है जिसके आधार पर खरीददार उस मशीन का प्रयोग करता है और कभी खराब हो जाने से उसी लघु पुस्तिका के आधार पर उसे ठीक भी करता है। इसी प्रकार ईश्वर ने भी मनुष्य उत्पत्ति के साथ-साथ वेद-ज्ञान मनुष्यों के लिए दिया जिसको पढ़कर तथा उसके अनुसार चलकर धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुपार व कर्त्तव्यभाव से करते हुए मोक्ष को प्राप्त करता है जो मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य है। जिसको पाने के लिए जीव मनुष्य योनि में आता है।

यहाँ समझाने की बात यह है कि मनुष्य की देह से जब आत्मा या जीव जाता है तो उसकी तीन गतियाँ होती हैं। यदि उस मनुष्य ने अपने जीवन में आधे से अधिक अच्छे व शुभ कर्म किये हैं तो उसको एक साधारण मनुष्य जीवन मिलता है। आधे से जितने अधिक अच्छे व युग कर्म करेगा तो उतनी ही मनुष्य योनि में अच्छा सुखदायक परिवार में उत्पन्न होगा यानि एक गरीब परिवार में न होकर किसी साहुकार राजा या कोई बड़े मंत्री के घर पैदा होगा। और जीवन में बुरे काम अधिक किये है तो ओसतन के हिसाब से पशु-पक्षी या कीट-पतंग की योनि में जन्म लेगा और जिस व्यक्ति ने जीवन भर अच्छे सत्कर्म या परोपकारी काम किये है, उसे मरने के बाद मोक्ष प्राप्त होगा। बस यह तीन गति ही मनुष्य चोला छोड़ने के बाद होती है। यह सब बातें मनुष्य ने अपनी कल्पना व्यक्ति से बनाया है, बाकी सही बात या विधि तो ईश्वर को ही ज्ञात है जो जीव के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार उसको अगली योनि देता है।

स्वास्थ्य चर्चा–

मूत्र सम्बन्धी रोगों के घरेलू नुस्खे

डॉ रामचन्द्र शाकल्य

मूत्र के साथ बूंद–बूंद और जलन के साथ मूत्र का आना, मूत्र बंद हो जाना आदि समस्या सिर्फ कष्टदायक ही नहीं यह मृत्यु का भी कारण बन सकता है। मूत्र सही मात्रा मे बिना जोर लगाए, बिना दर्द से आता रहे तो गुर्दे भी ठीक रहेंगे।मूत्र के रूके रहने पर गुर्दा फूल सकता है और काम करना भी बन्द कर सकता है। इस अवस्था में विष पूरे शरीर में फैलने का भय हो जाता है। यह बड़ी खतरनाक स्थिति है। गुर्दे पेशाब का उत्पादन करना ही बंद कर सकते हैं। अतः उपचार जरूरी है।

उपचार (घरेलू नुस्खे)

1. रोगी को गर्म पानी के टब में बिठायें या गर्म पानी मूत्राशय पर डालते रहें।
2. मूली के नर्म पत्तों में कलमी शोरा घोटकर पेडू पर लेप करें। बन्द मूत्र जारी हो जाता है।
3. श्वेत चन्दन को पानी में घिसकर पिलावें।
4. मक्की के भुट्टे के खूबसूरत सुनहरी बाल पानी में उबालकर पिलाने से मूत्र खुलकर आ जाता है।
5. घीया के बीजों को कूट पीसकर पानी में मिलाकर छानकर पीने से पेशाब के रोग ठीक हो जाते हैं। पेशाब नॉर्मल हो जाता है।
6. दिन में बार–बार पानी पीने से भी पेशाब खुलकर आता हैं।
7. तवाशीर आधा ग्राम से एक ग्राम तक चावल के पानी में खांड मिलाकर पिलायें।
8. बेल की शर्बत पी सकें तो पेशाब के रोग नहीं रहेंगे।
9. शतावरी का चूर्ण दो ग्राम मात्रा में ताजे पानी के साथ दिन में तीन बार लें। लाभप्रद है।
10. गिलोय का रस दो–तीन चम्मच पिलाते रहने से मूत्र के तमाम कष्ट दूर हो जाते है।
11. केले के तने से बाहरी रेशों को लें, रस निकालें। इसको पीने से भी यह रोग शान्त हो जाता है।
12. नौसादर 500 मि.ग्रा. 30 मि.ली. पानी में घोलकर थोड़ी थोड़ी देर बाद पिलावें।
13. आमलों का रस पिलाते रहने से मूत्र में जलन, मूत्र बन्द हो जाना और रूक जाना जैसी व्याधियों में आराम आ जाता है।
14. पुनर्नवा की जड़ का चूर्ण डेढ़ ग्राम दो–तीन बार प्रतिदिन खिलायें।
15. यदि उपलब्ध हो तो नारियल का पानी पीना हितकर रहता हैं।
16. एक मुटठी जौ लें, उसे दो गिलास पानी में उबालें, ठण्डा कर दिन में एक–एक कटोरी पांच छह बार पी लें यह पेशाब सम्बन्धी रोगों को ठीक करेगा।
17. गोखरू दो ग्राम दूध की लस्सी के साथ पिलाने से मूत्र के तमाम रोग दूर हो जाते हैं।
18. पलाश के बीजों का काथ एक औंस में चार रत्ती कलमी शोरा घोलकर पिलायें।
19. पेशाब प्रक्रिया को ठीक करने के लिए 100 ग्राम भिण्डी को दो गिलास पानी में 20 मिनट तक उबालें। ठण्डा कर कपड़छान करें। एक छोटा कप इसे दिन में एक समय पीते रहें।
20. ऐसे रोग मे सत्तू का शर्बत दिन में तीन बार एक–एक गिलास पिया करें।
21. पके हुए पपीते का सेवन भी इस रोग को शान्त करता हैं।
22. कुलफा का साग और भुजिया खिलायें या उसका रस पिलायें।
23. अजमोद का रस दिन में तीन बार पी लें अथवा इसकी चाय लें, इस रोग के लिए उत्तम है।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।